*प्रेस विज्ञप्ति*

# गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय
# पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

## विश्वविद्यालय में चारा उत्पादन एवं साइलैज निर्माण पर मास्टर ट्रेनर्स हेतु कार्यशाला प्रारंभ

पंतनगर। 2 दिसंबर 2025। पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय सभागार में चारा उत्पादन तथा साइलेज निर्माण पर मास्टर ट्रेनर्स के लिए आयोजित कार्यशाला और नर्सरी मैनेजमेंट विषयक स्टैंड–अलोन प्रशिक्षण कार्यक्रम का विधिवत् शुभारम्भ हुआ। दोनों प्रशिक्षण कार्यक्रम क्रमशः 29 नवंबर से 4 दिसंबर 2025 तथा 2 से 6 दिसंबर 2025 तक आयोजित किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों का संचालन आरईएपी–आईएफएडी उत्तराखंड ग्राम्य विकास समिति, ग्रामीण विकास विभाग, उत्तराखंड सरकार के सहयोग से किया जा रहा है।

कार्यशाला का शुभारम्भ मुख्य अतिथि कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान, निदेशक शोध डा. एस.के. वर्मा, कार्यवाहक अधिष्ठाता कृषि डा. रोहिताश्व सिंह, क्लाइमेट एसोसिएट आरईएपी–यूजीवीएस श्री विपन मडवाल तथा नोडल ऑफिसर आरईएपी–यूजीवीएस डा. ए.एस. नैन, को–पीआई एवं संयुक्त निदेशक, शोध डा. के.पी. सिंह एवं डा. अनिल कुमार, उपस्थित रहे।

अपने संबोधन में कुलपति डा. चौहान ने लैब टू लैण्ड के महत्व पर विशेष जोर दिया ताकि वैज्ञानिक पद्धतियाँ प्रभावी रूप से किसानों तक पहुँच सके। उन्होंने चारा उत्पादन, नर्सरी प्रबंधन, उद्यम विकास और स्टार्टअप प्रोत्साहन में आरईएपी–आईएफएडी एवं यूजीवीएस की पहल की सराहना की। उन्होंने कहा कि असली समझ तभी आती है जब कोई किसान से सीधे संवाद करता है और उनकी समस्याओं को समीप से समझता है। उन्होंने बताया कि पशुधन उत्पादकता 20 प्रतिशत पशु देखभाल, 60 प्रतिशत पोषण और 15 से 20 प्रतिशत पशु स्वास्थ्य पर निर्भर करती है। उन्होंने चारे में संतुलित फाइबर और खनिज सामग्री की आवश्यकता पर बल दिया। पहाड़ी क्षेत्रों से पलायन पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि बेहतर चारा उत्पादन और पशुधन–आधारित आय इस प्रवृत्ति को कम कर सकती है। प्रतिभागियों को सूक्ष्मजीव गतिविधि, किण्वन विज्ञान और ऑर्गेनिक साइलेज निर्माण को समझने के लिए उन्होंने प्रेरित किया। प्रशिक्षुओं को ऐसे नवाचार उपकरण और तकनीकें अपनाने के लिए भी प्रोत्साहित किया जो किसानों का समय, श्रम और लागत बचा सकें।

निदेशक शोध डा. एस.के. वर्मा ने पहल की सराहना करते हुए वैज्ञानिक तरीकों के माध्यम से चारा संकट को दूर करने की आवश्यकता बताई। कार्यवाहक अधिष्ठाता डा. रोहिताश्व सिंह ने प्रतिभागियों को प्रायोगिक सत्रों का पूरा लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। को–पीआई एवं संयुक्त निदेशक शोध डा. अनिल कुमार ने गुणवत्तापूर्ण चारे की भूमिका को दूध उत्पादन और पशु स्वास्थ्य सुधार में महत्वपूर्ण बताया। आरईएपी–आईएफएडी के श्री विपन मडवाल ने चल रही जमीनी पहलों और प्रक्षेत्र सफलताओं को साझा किया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में डा. ए.एस. नैन ने कार्यशाला के उद्देश्यों का विवरण प्रस्तुत किया और प्रतिभागियों को अपने–अपने क्षेत्रों में तकनीकों को लागू करने के लिए प्रेरित किया। विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ नवाचारपूर्ण चारा प्रबंधन, जलवायु–सहिष्णु खेती के तरीके, भंडारण तकनीकों और उन्नत साइलेज बनाने की विधियों पर सत्र संचालित करेंगे। यह कार्यक्रम प्रशिक्षकों को उन्नत ज्ञान से सशक्त करेगा, जिससे वे उत्तराखंड के किसान समुदायों का बेहतर समर्थन कर सकेंगे और सतत पशुधन विकास तथा ग्रामीण आजीविका में सुधार में योगदान दे सकेंगे।

कार्यक्रम के अंत में डा. पी.के. सिंह ने सभी उपस्थितजनों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में 13 जिलों से आए प्रशिक्षणार्थियों के साथ विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशकगण एवं संकाय सदस्य उपस्थित थे।